(6)

नया क्या नवल वर्ष में मित्र

पिशित भोजी मद्यप समुदाय,
नृत्यरत गाता स्वागत गीत।
नवल संवत्सर हतप्रभ भीत,
क्षुब्ध सागरतट और निशीथ।। 1 ।।

चपल चपलाद्युति से दिग्भ्रांत,
महत्वाकांक्षी किन्तु अयोग्य।
असंस्कृत दुर्विनीत दुश्शील,
युवा मानें सब संसृति भोग्य ।। 2 ।।

न होता उनको कुछ भी भान,
सवारूणि नैश निरंबर लास्य।
करेगा कितने नयन सनीर,
पोंछ डालेगा कितने हास्य।। 3 ।।

प्रजागार मध्य रात्रि का मित्र,
बना होता यदि जागृति मूल।
मनुजता क्यों रोती अनुवर्ष,
प्रपीड़क बनता क्यों भव शूल ।। 4 ।।

दीनता बढ़ी आढ्यता साथ,
विडम्बित कितना त्रस्त समाज।
विपुलमति फिर भी अल्पविवेक,
नव्यता अन्वेषी नर आज ।। 5 ।।

अर्थ कामा हर चेष्टा हुई,
अर्थ गर्भित हर अध्यवसाय।
देवगृह भेषज शिक्षा केन्द्र,
गेह तक निगल गया व्यवसाय ।। 6 ।।

हिरण्याक्षी है सब सभ्यता,
कनकचय पाता है सम्मान।
मनुज अवयव तक अब विक्रेय,
विकृति लक्षित हर अनुसंधान।। 7 ।।

दूरियाँ हुईं संकुचित पूर्ण,
बन सकी वसुधा पर न कुटुम्ब।
धर्मध्वज धारक लेते यहाँ,
अस्त्रकृत हिंसा का अवलम्ब ।। 8 ।।

मेनका कन्याजन आदर्श,
स्वैरिणी पाती है सम्मान ।
परिमिताम्बरता अनुकरणीय,
अंगदर्शन पर है अभिमान ।। 9 ।।

मद न था कभी रहा स्वीकार्य,
मदन दाहकता रही शिवत्व ।
मदनदा अब तरूणी है काम्य,
मदनदाप्लावन है सुख तत्व ।। 10 ।।

विदूषक कवि कहलाते आज,
और विट पाते अमित प्रभुत्व।
कुगीतों के गायक सम्मान्य,
कुनर्तक का है मान्य पटुत्व ।। 11 ।।

स्वसंस्कृति निन्दक है मानार्ह,
संशयात्मा है अब विद्वान ।
बुद्धि धन का विदेश विनियोग,
बनाता नर को सफल महान् ।। 12 ।।

रखो धन सरिता तल में गुप्त,
मार्ग यह दिखा गया धननन्द।
जिनेवा तट पर देखो बन्धु,
पद्म निधियाँ हैं पड़ीं अमन्द ।। 13 ।।

कृत्य वाणी चिंतन के मध्य,
विसंगति का अमेय विस्तार।
सफलता का है सूत्र अमोघ,
अनृत पाखण्ड और अतिचार ।। 14 ।।

सुमनयुत बहुसंख्यक थे मनुज,
सुमनयुत अब कुछ ही उद्यान।
सुराराधक थे जन-जन पूज्य,
सुराराधक का अब सम्मान ।। 15 ।।

प्रसृत मादकता का साम्राज्य,
कौंन रह सकता है थिर बुद्धि।
अनारत सह अवार्य आघात,
दया की भीख मांगती शुद्धि ।। 16 ।।

तत्पुरूष आदिम संज्ञा विभो,
हुआ फिर शंकर तब अभिधान।
बन गए पशुपति आज यथार्थ,
भूतपति होगा भावी नाम ।। 17 ।।

असित देवल का था जो देश,
असित चरितों से है अवसन्न।
अतनु सुख पाता था ऋत साध,
अतनु सुख में है आज निमग्न ।। 18 ।।

प्रेम करूणा मैत्री वात्सल्य,
तितिक्षा त्याग और उपकार।
भक्ति निष्ठा आर्जव संतोष,
शौच दम इंन्द्रिय प्रत्याहार ।। 19 ।।

खोज लेगें भावी मनु पुत्र,
संगणक शब्दकोश के मध्य।
मान लेंगे इनको अवदान,
जातकाख्यानोपम अनवद्य।। 20 ।।

गिद्ध बनता था रक्षक कभी,
आज बन जाता रक्षक गिद्ध ।
न मारूति करते अब पहचान,
बहुत से कालनेमि हैं सिद्ध ।। 21 ।।

कनक मृग हेतु न आग्रह करो,
न भेजो पुनः राम को दूर।
न लाँघो मर्यादा की रेख,
दानवी शक्ति बहुत है क्रूर ।। 22।।

विखंडित मन हो एकाकार,
कामना नर्तन हो उपराम।
व्यग्र उद्यम आतुर-आयास,
शमित संकल्पों का संग्राम।। 23 ।।

शिवेतर क्षति हो तृष्णा क्षाम,
क्षीण हो क्रमशः अरिषड् वर्ग।
सत्क्रिया पा तुमसे सत्कार,
मुदित धारे फलप्रद अपवर्ग ।। 24।।

मनुजता का बस सेवक रहे,
अनुक्षण वर्धमान विज्ञान।
तृषाकुल बने न नर नरयंत्र,
भुलाकर निज महिमा का ज्ञान ।। 25।।

मधु स्मृति बने अशेष अतीत,
अनागत हो गीतात्मक नित्य।
श्रेयपथ पथिक बनें सब जीव,
अनामय पद हो केवल इत्य।। 26।।

- शिव कुमार मिश्र-